International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(5): 20-22

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(5): 20-22
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-07-2018
Accepted: 08-08-2018

रोहिणी आनन्द
पी० एच० डी०, शोधछात्रा,
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू और कश्मीर, भारत

Correspondence
रोहिणी आनन्द
पी० एच० डी०, शोधछात्रा,
संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू और कश्मीर, भारत

वैदिक राजनैतिक आयुध

रोहिणी आनन्द

प्रस्तावना

वैदिक आर्य युद्ध में विविध प्रकार के आयुधों का उपयोग करते थे। इन आयुधों का उल्लेख यत्र–तत्र प्राप्त है। वेदों के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वैदिक आर्य अस्त्र और शस्त्र दोनों प्रकार के आयुधों का प्रयोग करते थे। इनके अतिरिक्त युद्धकाल में अंगरक्षक आयुधों का भी उपयोग होता था। अंगरक्षक आयुध युद्ध के अवसर पर रणभूमि में योद्धा के विविध अंगों, विशेष रूप से मार्मिक अंगों की रक्षा करते थे।

वैदिक युग के सभी प्रकार के आयुधों का संक्षिप्त परिचय, जैसा वैदिक संहिताओं में प्राप्त है, नीचे दिया जा रहा है –

(क) धनुषः वैदिक युग का परम उपयोगी एवं विशेष प्रचलित आयुध धनुष था। संहिताओं में धनुष की प्रशंसा में अनेक मन्त्र हैं। [1] उस युग में आर्यों का यह परम प्रिय एवं परम उपयोगी आयुध माना गया है। एक महत्त्वपूर्ण मन्त्र में, जिसे कुछ लोग वैदिक आर्यों का राष्ट्रगान भी कहते हैं, अनेक कामनाओं की प्राप्ति हेतु प्रार्थना की गयी है। इन कामनाओं में एक कामना यह भी व्यक्त की गयी है कि उनके वीर योद्धा बाण चलाने में कुशल हों। [2] इस प्रसंग से स्पष्ट है कि वैदिक आर्य आत्मरक्षा एवं शत्रु की पराजय के निमित्त धनुष–बाण के आश्रय पर विशेष आस्था रखते थे।

(ख) बाणः वेदों में बाण को इषु, शल्य, शर, सायक आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। [3] विशेष नुकीले बाण को वैदिक साहित्य में शल्या की संज्ञा दी गयी है। शल्य के अग्रभाग को शल्यमुख और शल्यमुख के अग्रभाग में जो नुकीला भाग होता था उसे शल्यदन्त कहा गया है। बाण का यह नुकीला अग्रभाग शत्रु के शरी का वेधन करता था। शल्य के इन अग्रभाग से सुरक्षित रहने के लिए वेदों में प्रार्थनाएँ की गयी हैं। इन प्राथनाओं का कुछ अंश इस प्रकार है – हे अनेक तुणीरधारी इन्द्र ! धनुष का विस्तार कर बाणों के अग्रभागों को निकाल कर हमारे लिए प्रसन्न मन वाले मंगलकारी होओ। [4] शल्य के अग्रभाग का नुकीला दन्त अस्थि, लोके तथा ऐसे किसी कठोर पदार्थ से बनाया जाता होगा। बाण में पक्षी के पर लगाने का भी चलन था। सम्भवतः इसलिए बाण को 'सुपर्ण' नाम से सम्बोधित किया गया है। [5] वेदों में उस बाण को सुपर्ण नाम से सम्बोधित किया गया है जिसमें सुपर्ण पक्षी का पंख लगा रहता था। यह कार्य बाण को द्रुतगामी बनाने के लिए किया जाता होगा। वेदों में बाणों के चलाने, उनके द्वारा शत्रु के शरीरों के वेधन करने, शत्रु पर बाण–वर्षा करने आदि के बड़े रोचक एवं सजीव वर्णन है। इनका एक उदाहरण इस प्रकार है – बाण का नुकीला अग्रभाग वेध्य प्राणी की खोज करने वाला होता है। तांत की डोरी से प्रेरित बाण गिरता है, जहाँ मनुष्य विशेष प्रकार से इधर–उधर दौड़ते हैं, वहाँ हमारे लिए सुख प्रदान करें। [6] हे सीधी गति वाले बाण, हमें बचा जा, हमें सब ओर से दूर रख। हमारे शरीर पत्थरवत् हो जायें, सोम साहस दे, पृथ्वी हमारे लिए सुख प्रदान करे। [7]

(ग) तुणीरः युद्धकाल में योद्धाओं को बाण रखने की सुविधा हेतु एक विशेष प्रकार के खोल का निर्माण किया था। वेदों में इस खोल को तुणीर अथवा इषुधि की संज्ञा दी गयी है। योद्धा तुणीर को अनी पीठ पर बांधकर लटकाये रहते थे, जिससे वे सुविधापूर्वक उसमें बाण रख सकते थे और आवश्यकतानुसार उससे बाण निकाल सकते थे। वेदों में इस तथ्य की पुष्टि में संकेत उपलब्ध हैं। इन संकेतों में एक संकेत इस प्रकार है – पीठ पर दृढ़ता से बंधा हुआ तुणीर विजय प्राप्त करता है। ऋग्वेद के एक प्रसंग में तुणीर का अति रोचक एवं सजीव वर्णन मिलता है। उसमें कहा गया है कि अनेक पुत्रों वाले पिता के समान तुणीर संग्राम में पहुंचकर ''चि–चि'' शब्द करता है और पीठ पर बंधा हुआ तुणीर संधीभूत अथवा बिखरी हुई सम्पूर्ण सेना को प्रेरित करता हुआ विजय प्राप्त करता है। [8]

(घ) वज्रः धनुष–बाण के अतिरिक्त आर्यों का राजा इन्द्र एक विशेष अस्त्र का उपयोग करता था। वेदों में इस अस्त्र को वज्र के नाम से सम्बोधित किया गया है। इन्द्र ने अपने बलवान् एवं भयंकर शत्रु वध इसी अस्त्र के द्वारा किया था। वह इन्द्र का अपना विशेषण आयुध था। इसीलिए इन्द्र को वेदों में वज्रिन्, वज्रवातु आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है। [9] वज्र लोहे से निर्मित होता था, ऐसा वेदों में उल्लिखित है। [10] ऋग्वेद के अनुसार त्वष्टा ने लोहे का वज्र बनाया था। [11] ऋग्वेद के एक अन्य स्थल पर यह भी बतलाया गया है कि इन्द्र ने वृत्र नाम के असुर का वध करने के लिए दधीचि की अस्थियों से वज्र का निर्माण किया था। त्वष्टा द्वारा निर्मित वज्र सुवर्ण के समान प्रकाशमान बतलाया गया है। [12]

(ङ) सृकः सृक नाम के आयुध का भी वेदों में उल्लेख है। निघण्टु में सृक को वज्र कोटि में परिगणित किया गया है। [13] इस आधार पर सृक आयुध विशेष प्रकार का वज्र ही होता होगा। वेदों में सृक रुद्र का विशेष आयुध बतलाया गया है। [14] आर्यों का राजा इन्द्र भी इस आयुध का उपयोग करता था। [15] इस प्रकार सृक नाम का वैदिक आयुध वज्र के समान ही एक विशेष आयुध रहा होगा। सृक के आकार–प्रकार के विषय में भी सप्रमाण कुछ कहा नहीं जा सकता। वैदिक युग के समाप्त हो जाने के उपरान्त वज्र के समान ही सृक भी लोक से लुप्त हो गया।

(च) हेतिः हेति नाम का वृक विशेष अस्त्र होता था। इन्द्र हेति का भी उपयोग करता था। [16] निघण्टु ने हेति को भी वज्र का ही एक प्रकार माना है। [17] हेति भी इसी प्रकार वज्र के समान ही घातक आयुध था। यजुर्वेद के एक मन्त्र में हेति का सम्बन्ध धनुष से जोड़ा गया है। [18] इससे ज्ञात होता है कि हेति भी बाण के समान धनुष की डोरी का आश्रय लेकर शत्रु पर फेंका जाता था। आचार्य उब्बट ने यजुर्वेद के उस मन्त्र की व्याख्या करते हुए हेति शब्द को इसी रूप में स्पष्ट किया है। [19] वेदों में हेति का जो वर्णन दिया हुआ है उसमें यह स्पष्ट बतलाया गया है कि हेति देवों का आयुध था और जिसका उपयोग इन्द्र, सोम, वरुण, बृहस्पति आदि देव विशेष रूप में किया करते थे। [20] वैदिक युग के उपरान्त वज्र और सृक के समान ही इस आयुध का उपयोग समाप्त हो गया।

(छ) पाशः शत्रु को पकड़ने के लिए पाश का विशेष प्रयोग किया जाता था। रस्सी में विशेष प्रकार का फंदा बनाकर पाश का निर्माण किया जाता था। इस फंदे में शत्रु को फांस लिया जाता था और पाश की रस्सी से उसे अपने पास खींच लिया जाता था। इसी प्रकार पाश द्वारा शत्रु को पकड़ कर उसे बन्दी बना लिया जाता था अथवा उसका वध–कर दिया जाता था। वैदिक युग में पाश का विशेष उपयोग किया जाता था। [21] पाश वरुणदेव का महत्त्वपूर्ण आयुध बतलाया गया है। [22] अथर्ववेद में भी पाश का वर्णन आयुध के रूप में हुआ है। [23] अथर्ववेद में पाश के छः भेद बतलाये गये हैं। इन्हें साम्य, व्याम्य, संदेश्य, विदेश्य, दैव और मानुष पाश के नाम से सम्बोधित किया गया है। [24] इन विविध प्रकार के पाशों का स्वरूप क्या था ? स्पष्ट नहीं है। वैदिक युग के उपरान्त पाश भी अनुपयोगी समझा जाने लगा और इस प्रकार शनैः शनैः लोक ने उसका परित्याग कर दिया।

(ज) असिः वेदों में असि नाम के शस्त्र का भी उल्लेख है। [25] इन्द्र युद्ध में अथवा अति समीप आये हुए शत्रु का वध करने के लिए असि नामक शस्त्र को उपयोगी समझता होगा। सिन्धु घाटी की खुदाई करने पर जो ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई है उसमें किसी रूप में भी असि नहीं पायी गयी, इससे ज्ञात होता है कि सिन्धु घाटी के निवासी इसके प्रयोग से अनभिज्ञ थे। ऋग्वेद में असि का उल्लेख है। इससे ऐसा जान पड़ता है कि असि का सर्वप्रथम प्रयोग भारत में आर्यों ने किया होगा। वैदिक असि का आकार–प्रकार एवं उसका स्वरूप कैसा था ? ज्ञात नहीं है। सम्भवतः आधुनिक तलवार का पूर्व रूप ऋग्वेदीय असि आयुध रहा होगा।

(झ) परशुः ऋग्वेद में परशु का उल्लेख आयुध के रूप में है। [26] अथर्ववेद में भी परशु का वर्णन युद्ध के आयुधों के वर्णन के साथ हुआ है। [27] इससे स्पष्ट है कि वैदिक युग में परशु भी युद्ध के आयुधों में एक आयुध था। इसके अतिरिक्त काट–छांट के लिए परशु का उपयोग होता था। परशु वृक्षों को काटने के लिए भी प्रयोग में लाया जाता था। [28] ऋग्वेद के अनुसार परशु लोहे का होता था। [29] परशु आधुनिक फरसा के समान होता होगा। कौटिल्य ने परशु को क्षुर वर्ण के आयुधों में परिगणित किया है। [30] वैदिक युग के उपरान्त युद्ध हेतु परशु विशेष उपयोगी आयुध समझा जाता था। परशुराम का यह सर्वप्रिय आयुध बतलाया गया है।

(ञ) ऋष्टिः ऋग्वेद में ऋष्टि नाम के एक शस्त्र का उल्लेख है। [31] ऋष्टि एक प्रकार का भाला होता था। ऋष्टि भी देवों का आयुध बतलाया गया है। ऋग्वेद के एक प्रसंग में सात प्रकार की ऋष्टियों की ओर संकेत किया गया है। [32] इससे ज्ञात होता है कि ऋष्टि के अनेक प्रकार थे। इसके अतिरिक्त ऋष्टि के विषय में सूचना रूप में और कुछ सामग्री उपलब्ध नहीं है।

(ट) रम्भिणीः रम्भिणी भी कुछ एक प्रकार का भाला होता था। [33] इस शस्त्र के विषय में कुछ भी उल्लेख नहीं मिलता।

(ठ) वाशीः वाशी नाम का आयुध एक प्रकार का छुरा होता था। [34] इसका प्रयोग भी शत्रु के हनन हेतु किया जाता था।

(ड) क्षुरः वेदों में क्षुर नाम के शस्त्र का भी उल्लेख है। क्षुर एक प्रकार का फाल वाला चाकू होता होगा, जो अपनी तीक्ष्ण धार के लिए प्रसिद्ध था। [35]

(ढ) शूलः लोकि का नुकीला टुकड़ा शूल कहलाता था। इसका भाग पतला, नुकीला और तीक्ष्ण होता था। [36] कौटिल्य ने भी शूल को शस्त्र माना है। उनके समय में भी शूल को प्रसिद्ध शस्त्रों में स्थान दिया गया है।

(ण) अश्माः वेदों में पाषाण (अश्मा) को भी आयुध कोटि में परिगणित किया गया है। ऋग्वेद में एक स्थल पर पाषाण द्वारा शत्रु के हनन करने की ओर संकेत दिया गया है। [37]

(त) दण्डः आधुनिक लाठी के स्थान में दण्ड का प्रयोग मार–पीट हेतु होता होगा। वेदों में दण्ड को शस्त्र कोटि में परिगणित किया गया है। [38] आचार्य कौटिल्य ने भी दण्ड को शस्त्रों में स्थान दिया है। [39]

(थ) अश्माः वेदों में पाषाण (अश्मा) को भी आयुध कोटि में परिगणित किया गया है। ऋग्वेद में एक स्थल पर पाषाण द्वारा शत्रु के हनन करने की ओर संकेत किया गया है। [40] एक अन्य प्रसंग में यम को पाषाण फेंकने वाला बतलाया गया है। [41] इसी वेद के एक प्रसंग में पाषाण द्वारा राक्षसों में नष्ट कर देने की याचना की गयी है। [42] अथर्ववेद में भी अश्मा को आयुध श्रेणी में परिगणित किया गया है।

संधर्व सूची

1. धन्वना गा धन्वनाऽजि जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम्।
   धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम्।। ऋग्वेद – 6.75.21, यजुर्वेद – 29.39
   नमो इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो।। यजुर्वेद – 16.22

2. यजुर्वेद – 22.22
3. ऋग्वेद – 11.75.6., 4.87.10, 10.33.2, 11.77.6, अथर्ववेद – 1 से 5.3.1
4. यजुर्वेद – 13.16
5. ऋग्वेद – 11.75.6
6. ऋग्वेद – 11.75.6
7. ऋग्वेद – 12.76.6
8. ऋग्वेद – 5.75.2
9. ऋग्वेद – 6.75.6
10. ऋग्वेद – 5063.1, 6.103.10, 12.80.1, अथर्ववेद – 3.30.20
11. ऋग्वेद – 3.48.10
12. ऋग्वेद – 13.84.1
13. ऋग्वेद – 9.85.1
14. निघण्टु – सृकम् इति वज्रनाम – 2.20
15. यजुर्वेद – 21.16
16. ऋग्वेद – 12.32.1, यजुर्वेद – 7.18
17. निघण्टु – 2.20
18. यजुर्वेद – 12.16
19. यजुर्वेद – 12.16 – उब्बट महीधर भाष्य
20. यजुर्वेद – 10 से 14.15
21. ऋग्वेद – 13.24.1, यजुर्वेद – 25,26.1
22. ऋग्वेद – 7.88.7
23. अथर्ववेद – 2.12.2
24. अथर्ववेद – 8.16.4
25. ऋग्वेद – 18.86.10, यजुर्वेद – 43.25, अथर्ववेद – 1.9.1
26. ऋग्वेद – 3.127.1
27. अथर्ववेद – 1.9.1
28. ऋग्वेद – 21.104.7
29. ऋग्वेद – 9.53.10
30. अर्थशास्त्र – 15.18.2
31. ऋग्वेद – 4.168.1
32. ऋग्वेद – 5.28.8
33. ऋग्वेद – 3.168.1
34. ऋग्वेद – 2.57.5
35. ऋग्वेद – 16.4.8.
36. ऋग्वेद – 11.162.1
37. अर्थशास्त्र – 42.3.2
38. ऋग्वेद – 6.33.7, अथर्ववेद – 4.5.5
39. अर्थशास्त्र – 41.3.2
40. ऋग्वेद – 5.104.7
41. ऋग्वेद – 2.172.1
42. ऋग्वेद – 17.104.7